अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जितने युद्ध किए, मैं उनमें से किसी युद्ध में भी शरीक होने से पीछे नहीं रहा। मैं केवल तबूक युद्ध में पीछे रह गया था। वैसे तो बद्र युद्ध में भी साथ नहीं था, लेकिन बद्र युद्ध में पीछे रह जाने पर आपने किसी पर नाराज़गी व्यक्त नहीं की थी।

अब्दुल्लाह बिन कअब बिन मालिक रिवायत करते हैं। याद रहे कि जब कअब बिन मालिक की आँखों की रोशनी चली गई, तो उनके बेटों में से अब्दुल्लाह ही उन्हें जहाँ जाना-आना होता ले जाते। वह कहते हैं कि मैंने कअब बिन मालिक से तबूक युद्ध में उनके अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से पीछे रह जाने की घटना सुनी। कअब बिन मालिक-रज़ियल्लाहु अन्हु- ने बतायाः अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जितने युद्ध किए, मैं उनमें से किसी युद्ध में भी शरीक होने से पीछे नहीं रहा। मैं केवल तबूक युद्ध में पीछे रह गया था। वैसे तो बद्र युद्ध में भी साथ नहीं था, लेकिन बद्र युद्ध में पीछे रह जाने पर आपने किसी पर नाराज़गी व्यक्त नहीं की थी, क्योंकि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) क़ुरैश के एक क़ाफ़िले को दबोचने का इरादा करके निकले थे और अल्लाह ने पहले से समय निर्धारित किए बिना ही मुसलमानों का सामना शत्रु से करा दिया था। मैं तो अक़बा की रात भी अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ मौजूद था, जहाँ हमने इस्लाम पर क़ायम रहने की प्रतिज्ञा ली थी। यद्यपि लोगों में बद्र युद्ध की चर्चा अधिक है, लेकिन मैं यह बात पसंद नहीं करता कि मुझे अक़बा की रात के बदले बद्र युद्ध में साथ रहने का अवसर मिला होता। तबूक युद्ध में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से पीछे रहने की घटना इस प्रकार है कि मैं जिस ज़माने में तबूक युद्ध से पीछे रहा, उस समय इतना शक्तिशाली और संपन्न था कि पहले कभी नहीं हुआ था। अल्लाह की क़सम! उससे पहले मेरे पास दो ऊँटनियाँ कभी एकत्र नहीं हुई थीं, जबकि इस अवसर पर मेरे पास दो ऊँटनियाँ मौजूद थीं। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का सिद्धांत यह था कि जब किसी युद्ध में जाने का इरादा करते, तो उसे पूरे तौर पर ज़ाहिर न होने देते थे बल्कि किसी दूसरे स्थान का नाम लेते। परन्तु, यह युद्ध चूँकि प्रचंड गर्मी में हुआ और यात्रा लंबी तथा मरुभूमि की थी और शत्रु की भारी संख्या का सामना था, इसलिए आपने मुसलमानों के सामने मामला स्पष्ट कर दिया, ताकि वे अच्छी तरह युद्ध की तैयारी कर लें। उन्हें वह दिशा भी बता दी, जिधर आपको जाना था। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ मुसलमान बड़ी संख्या में थे और कोई पंजी नहीं थी, जो उनके नामों को सुरक्षित रखती। कअब (रज़ियल्लाहु अंहु) कहते हैं◌ः स्थिति ऐसी थी कि यदि कोई व्यक्ति युद्ध से अनुपस्थित रहना चाहता, वह यह सोच सकता था कि यदि वह्य के द्वारा आपको सूचना न दी गई तो किसी को मेरी अनुपस्थिति का पता न चल सकेगा। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उस युद्ध का इरादा ऐसे समय में किया था, जब फल पक चुके थे और पेड़ों के साये बड़े मनोरम लग रहे थे तथा मैं उनकी ओर खिंचाव महसूस कर रहा था। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने और आपके साथ मुसलमानों ने तैयारी शुरू कर दी। मेरी हालत यह थी कि मैं सुब्ह को इस इरादे से निकलता कि मैं भी आपके साथ

कहने कर कारण उतना उपकार किया हो, जितना मुझपर किया है। अल्लाह की क़सम, जबसे मैंने अल्लाह के रसूल - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से यह बात कही, उस दिन से आज तक मैंने झूठ नहीं बोला और आशा है कि अल्लाह जीवन के बाकी बचे हुए दिनों में भी मुझे इससे सुरक्षित रखेगा। वह कहते हैं कि इसके बाद अल्लाह ने यह आयतें उतारीं◌ः "अल्लाह ने नबी तथा मुहाजिरीन और अंसार पर दया की, जिन्होंने तंगी के समय आपका साथ दिया, इसके पश्चात कि उनमें से कुछ लोगों के दिल कुटिल होने लगे थे। फिर उनपर दया की। निश्चय वह उनके लिए करुणामय दयावान है। तथा उन तीनों पर, जिनका मामला विलंबित कर दिया गया था और जिनपर धरती अपने विस्तार के बावजूद तंग हो गई और उनपर उनके प्राण संकीर्ण हो गए और उन्हें विश्वास था कि अल्लाह के सिवा उनके लिए कोई शरणागार नहीं है, परन्तु उसी की ओर। फिर उनपर दया की, ताकि तौबा कर लें। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है। ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो, तथा सच्चों के साथ हो जाओ।" (सूरा अत-तौबाः 177-119) कअब - रज़ियल्लाहु अन्हु- कहते हैं◌ः अल्लाह की क़सम, जबसे अल्लाह ने मुझ इस्लाम की राह दिखाई है, उसके बाद से अल्लाह ने मुझे जो नेमतें प्रदान की हैं, उनमें मेरी नज़र में, सबसे बड़ी नेमत यह है कि मुझे अल्लाह के रसूल- सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के आगे सच बोलने की सामर्थ्य प्रदान की गई और मैं झूठ बोलकर हलाक न हुआ, जैसे दूसरे वह लोग हलाक हो गए, जिन्होंने झूठ बोला था। क्योंकि अल्लाह तआला ने वह्य उतारते समय झूठ बोलने वालों के बारे में ऐसे बुरे शब्द प्रयोग किए हैं, जो किसी और के बारे में प्रयोग नहीं किए। अल्लाह तआला ने फ़रमायाः "वह तुम्हारे सामने अल्लाह की क़सम खाएँगे, जब तुम उनकी ओर वापस आओगे, ताकि तुम उनसे विमुख हो जाओ, तो तुम उनसे विमुख हो जाओ, वास्तव में वे मलीन हैं और उनका आवास नरक है, उन कर्मों के बदले जो वे क्या करते थे। वे तुम्हारे सामने क़समें खाएँगे, ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ, अगर तुम उनसे राज़ी हो भी गए, तो अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों से राज़ी नहीं होता।" (सूरा अत-तौबाः 95-96) कअब - रज़ियल्लाहु अन्हु- कहते हैं◌ः दरअसल अल्लाह के रसूल- सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने हम तीन लोगों के मामले उन लोगों से अलग करके विलंबित कर दिया था, जिन्होंने आपके सामने झूठी क़समें खाई थीं। आपने उनसे बैअत ले ली थी और उनके हक़ में माफ़ी की दुआ कर दी थी। जबकि आपने हमारे मामले को लंबित रख दिया, यहाँ तक कि खुद अल्लाह ने निर्णय कर दिया। फ़रमायाः " خلفوا الذين الثلاثة وعلى) "अर्थात, उन तीन लोगों की तौबा भी क़बूल कर ली, जो पीछे कर दिए गए थे।) यहाँ अल्लाह ने जिस पीछे करने का ज़िक्र किया है, उससे मुराद हमारा युद्ध से पीछे रहना नहीं है, बल्कि झूठी क़समें खाने वालों और बहाने पेश करने वालों से हमारे मामले को पीछे करके उनकी बात स्वीकार कर लेना है। (बुख़ारी एवं मुस्लिम) तथा एक रिवायत में हैः अल्लाह के रसूल- सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- तबूक युद्ध के लिए वृहस्पतिवार को निकले और आपको वृहस्पतिवार को निकलना पसंद था। तथा एक रिवायत में हैः आप यात्रा से हमेशा दिन में चाश्त के समय वापस आते। जब वापस आते तो पहले मस्जिद जाकर दो रकअत नमाज़ पढ़ते और उसके बाद वहीं बैठ जाते।
[सह़ीह़] [इसे बुख़ारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है।]

http://www.sunnah.global/hadeeth/hi/show/4820